

3 | राजधानी

कार शोरूम में गोलीबारी  
का आरोपी गिरफ्तार

6 | अभिमत

नैतिकता दरकिनार  
चुनावी दौर में

11 | विदेश

इंडोनेशिया में  
बाढ़ से तबाही

12 | स्पोर्ट्स

लिविंगस्टोन आईपीएल  
से चोट के कारण हटे

RNI NO.DELHIN/2012/48369

वर्ष 12 अंक 185

नई दिल्ली, मंगलवार, 5 मई, 2024

पृष्ठ 12 मूल्य ₹ 3

नगर संस्करण



नई दिल्ली, लखनऊ और रायपुर से प्रकाशित

# पायनियर

www.dailypioneer.com

## वोटिंग ने फिर नहीं पकड़ी रफ्तार

**चौथे चरण में 64 प्रतिशत मतदान हुआ, श्रीनगर ने किया बेहतर प्रदर्शन**

राजेश कुमार। नई दिल्ली

मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए चलाए गए महन मतदान जागरूकता कार्यक्रम निर्धारक रहे क्योंकि चौथे चरण के आम चुनाव में सोमवार को औसत प्रिंसिपर 64 प्रतिशत (तक 10 बजे तक) रहे था। पहले तीन चरणों में मतदान क्रमशः 66.14 प्रतिशत, 66.71 प्रतिशत और 65.68 प्रतिशत था। दिल्लीस्या बात यह है कि अच्छी खबर जम्मू-कश्मीर से आई जहाँ अनुच्छेद 370 हने के बाद मतदान हुआ। श्रीनगर में औसतन 36.88 प्रतिशत मतदान दर्ज किया गया। यह अंकड़ा 2019 में श्रीनगर के मतदान से अधिक है जब यहाँ 14.43 फोसदी मतदान हुआ था। 2014, 2009, 2004 और 1999 के अंकड़े क्रमशः 25.86 फोसदी, 25.55 फोसदी, 18.57 फोसदी और 11.93 फोसदी हैं।

पश्चिम बंगाल में तुर्पलूल कांग्रेसी और भाजपा कार्यकर्ताओं के बीच हिंसा की घटनाओं के बीच 10 राज्यों में पर ईस्यूल कांग्रेस के लिए अहम दौरा था और बोर्डों के लिए कुछ खास नहीं। चुनाव आयोग के मुताबिक, अन्य राज्यों में चुनाव हुए, जबकि आप्रवेश में कई स्थानों पर वाईएसआरसीपी और टीटीपी कार्यकर्ताओं के बीच मारपीट हुई और साथ ही उत्तर प्रदेश में कुछ स्थानों पर चुनाव बहिष्कार की खबरें आईं। इसके अलावा पश्चिम



ओडिशा के बेलानगुप्त में चौथे चरण के लोकसभा चुनाव के लिए वोट डालने जाते मतदान।

बंगाल और ओडिशा में भी कुछ बूथों पर ईस्यूएम में खासी की खबरें आईं। वाईएस बाबाद में 76.02 प्रतिशत, तेलंगाना में 60.24 प्रतिशत, तेलंगाना में 61.54 प्रतिशत और उत्तर प्रदेश में 58 प्रतिशत मतदान हुआ। तेलंगाना में असज्जन औवेसी का गढ़ माने जाने से भाजपा उम्मीदवार दिलीप थोष अपने दौरे पर जा रहे थे। बूथ जाम होने की शिकायतों के बाद मतदान को क्रमबद्ध किया। सूत्रों ने दावा किया कि थोष के साथ कथित तौर पर टीएमपी कार्यकर्ताओं ने धक्का-मुक्की की।

पश्चिम बंगाल के लोकसभा क्षेत्रों में मतदान सुख होने से महज कुछ घंटे पहले हुई। पश्चिम बंगाल के मुख्य निर्वाचन अधिकारी के दावों के बीच कि मतदान अंत तक शारीरिक रहा है, बधमान-दुर्गमपुर लोकसभा सीटों पर मौटेश्वर के सुमिनिया इलाके में दोपहर के असापास टीएमपी और भाजपा के समर्थकों के बीच झड़प हो गई, जब भाजपा उम्मीदवार दिलीप थोष अपने दौरे पर जा रहे थे। बूथ जाम होने की शिकायतों के बाद मतदान को क्रमबद्ध किया। सूत्रों ने दावा किया कि थोष के साथ कथित तौर पर टीएमपी कार्यकर्ताओं ने धक्का-मुक्की की।

एक वीडियो विलप सामने आने के बाद चुनाव अधिकारियों ने तेलंगाना की हैदराबाद लोकसभा सीटों पर भाजपा उम्मीदवार के मास्टिली लोटा के खिलाफ मामला दर्ज किया। वीडियो में वह बुर्का पहने महिला मतदाताओं से कथित तौर पर चेहरा दिखाने के लिए कह रही थी। ओप्रेर प्रदेश में, तेलुगु देशम पार्टी (तेदेपा) और वाईएसआरसीपी ने खासकर पलनाडु, कडपा और अनाम्या जिलों में एक दूसरे पर दिस्ता के अरोप लगाए। वाईएसआरसीपी ने चुनाव आयोग को पत्र लिखकर प्रतिरुद्धीर्ण देते हुए पर बेमुख दरसी, इच्छुपूर्स, कृष्णप, माचेला, मार्कोपुर, पालकोंडा और पेदाकुरापेडु समेत (शेष पेज 9)



आतंकवाद के विलाप जीरो टॉलेंस नीति और कड़ी कार्रवाई की गारंटी

देश की सीमाओं पर मजबूत इन्फ्रास्ट्रक्चर के विकास की गारंटी

वामपंथी उत्तराधिकार के विलाप कड़ी कार्रवाई की गारंटी

इंटरनेट पर डिजिटल खतरों से देशवासियों की सुरक्षा की गारंटी

ये हैं  
गोदी की  
गारंटीनीयत सही  
तो नतीजे सहीफिर एक बार  
मोदी सरकार

कमल का बटन दबाएं 🙏 ● भाजपा को जिताएं

## ग्राउंड जीरो से पायनियर की रिपोर्ट

उत्तर प्रदेश

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ



टीएन रघुनाथ। मुंबई

तीन निर्वाचन क्षेत्रों में वोट खिलाफ़े के लिए पैसे के कथित विपरीत के बारे में विपरीत महा विकास आरज़ी (एसवीए) की शिकायत के बीच, चौथे में ग्यारह लोकसभा क्षेत्रों में शाम 5 बजे तक 2.28 करोड़ मतदाताओं में से औसतन 52.75 प्रतिशत ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया।

सिवाय इसके कि उत्तरी महाराष्ट्र के आदिवासी बहुल नंदुखर निर्वाचन क्षेत्र में शाम 5 बजे तक 60.60

प्रतिशत भारी मतदान हुआ, अन्य दस निर्वाचन क्षेत्रों में 43.80 प्रतिशत से 58.65 प्रतिशत तक मतदान हुआ, जो मतदान के समान पैटर्न के अनुरूप था। ग्यारह लोकसभा क्षेत्रों के अलावा तीन चरणों के बीच चुनाव लड़ रहे हैं। इसके अलावा खारी लोकसभा सीट पर केंद्रीय गृह ग्राम पंचायती अधिकारी मिशन नीति की प्रतिशत दर्ज किया गया। इसके बाद वोट देने के लिए सेंट मीरा गोपनी ने अपने अधिकार का प्रयोग किया।

सिवाय इसके कि उत्तरी महाराष्ट्र के आदिवासी बहुल नंदुखर निर्वाचन क्षेत्र में शाम 5 बजे तक निम्नलिखित मतदान

महाराष्ट्र



प्रतिशत भारी मतदान हुआ, अन्य दस निर्वाचन क्षेत्रों में 43.80 प्रतिशत से 58.65 प्रतिशत तक मतदान हुआ, जो मतदान के समान पैटर्न के अनुरूप था। ग्यारह लोकसभा क्षेत्रों के अलावा तीन चरणों के बीच चुनाव लड़ रहे हैं। इसके अलावा खारी लोकसभा सीट पर केंद्रीय गृह ग्राम पंचायती अधिकारी मिशन नीति की प्रतिशत दर्ज किया गया। इसके बाद वोट देने के लिए सेंट मीरा गोपनी ने अपने अधिकार का प्रयोग किया।

प्रतिशत भारी मतदान हुआ, अन्य दस निर्वाचन क्षेत्रों में 43.80 प्रतिशत से 58.65 प्रतिशत तक मतदान हुआ, जो मतदान के समान पैटर्न के अनुरूप था। ग्यारह लोकसभा क्षेत्रों के अलावा तीन चरणों के बीच चुनाव लड़ रहे हैं। इसके अलावा खारी लोकसभा सीट पर केंद्रीय गृह ग्राम पंचायती अधिकारी मिशन नीति की प्रतिशत दर्ज किया गया। इसके बाद वोट देने के लिए सेंट मीरा गोपनी ने अपने अधिकार का प्रयोग किया।

प्रतिशत भारी मतदान हुआ, अन्य दस निर्वाचन क्षेत्रों में 43.80 प्रतिशत से 58.65 प्रतिशत तक मतदान हुआ, जो मतदान के समान पैटर्न के अनुरूप था। ग्यारह लोकसभा क्षेत्रों के अलावा तीन चरणों के बीच चुनाव लड़ रहे हैं। इसके अलावा खारी लोकसभा सीट पर केंद्रीय गृह ग्राम पंचायती अधिकारी मिशन नीति की प्रतिशत दर्ज किया गया। इसके बाद वोट देने के लिए सेंट मीरा गोपनी ने अपने अधिकार का प्रयोग किया।

प्रतिशत भारी मतदान हुआ, अन्य दस निर्वाचन क्षेत्रों में 43.80 प्रतिशत से 58.65 प्रतिशत तक मतदान हुआ, जो मतदान के समान पैटर्न के अनुरूप था। ग्यारह लोकसभा क्षेत्रों के अलावा तीन चरणों के बीच चुनाव लड़ रहे हैं। इसके अलावा खारी लोकसभा सीट पर केंद्रीय गृह ग्राम पंचायती अधिकारी मिशन नीति की प्रतिशत दर्ज किया गया। इसके बाद वोट देने के लिए सेंट मीरा गोपनी ने अपने अधिकार का प्रयोग किया।

प्रतिशत भारी मतदान हुआ, अन्य दस निर्वाचन क्षेत्रों में 43.80 प्रतिशत से 58.65 प्रतिशत तक मतदान हुआ, जो मतदान के समान पैटर्न के अनुरूप था। ग्यारह लोकसभा क्षेत्रों के अलावा तीन चरणों के बीच चुनाव लड़ रहे हैं। इसके अलावा खारी लोकसभा सीट पर केंद्रीय गृह ग्राम पंचायती अधिकारी मिशन नीति की प्रतिशत दर्ज किया गया। इसके बाद वोट देने के लिए सेंट मीरा गोपनी ने अपने अधिकार का प्रयोग किया।

प्रतिशत भारी मतदान हुआ, अन्य दस निर्वाचन क्षेत्रों में 43.80 प्रतिशत से 58.65 प्रतिशत तक मतदान हुआ, जो मतदान के समान पैटर्न के अनुरूप था। ग्यारह लोकसभा क्षेत्रों के अलावा तीन चरणों के बीच चुनाव लड़ रहे हैं। इसके अलावा खारी लोकसभा सीट पर केंद्रीय गृह ग्राम पंचायती अधिकारी मिशन नीति की प्रतिशत दर्ज किया गया। इसके बाद वोट देने के लिए सेंट मीरा गोपनी ने अपने अधिकार का प्रयोग किया।

प्रतिशत भारी मतदान हुआ, अन्य दस निर्वाचन क्षेत्रों









# केजरीवाल को जमानत चुनाव पर असर

अरविंद केजरीवाल को चुनाव प्रचार के लिए अंतरिम जमानत मिल गई है जिससे चुनाव थोड़ा और जटिल हो सकता है। प्रवर्तन निदेशलय द्वारा करोड़ों रुपयों के 'शारब घोटाले' में संलिप्तता के आरोप में दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को 50 दिनों की न्यायिक हिरासत में भेजा गया था, लेकिन अब अंतरिम जमानत मिलने से उनका चुनाव प्रचार में प्रवेश हो गया है। अपनी बड़बोली शैली के लिए जाने जाने वाले आम आदमी पार्टी-आप नेता ने अपने भाषण से 'भाजा समर्थक' मतदाताओं में यह कह कर भ्रम पैदा करने का प्रयास किया कि प्रधानमंत्री मोदी 75 वर्ष की आयु पूरे होने पर सेवानिवृत्त हो जाएंगे और अमित शाह को प्रधानमंत्री बना दींगे। स्वयं अमित शाह ने इसका खंडन करते हुए कहा कि भाजा के संविधान में ऐसा कोई प्राविधान नहीं है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि मोदी न केवल तीसरी बार प्रधानमंत्री बनेंगे, बल्कि वे 2029 में भी पार्टी का नेतृत्व करेंगे।

विपक्ष के कुछ नेताओं को केजरीवाल की अंतरिम जमानत से खुशी हो सकती है, लेकिन कांग्रेस को चिन्ता है कि 'आप' उसे नुकसान पहुंचा सकती है। 'आप' पर निकट अतीत में लगे भृष्टाचार के गंभीर आरोपों के कारण जनता में उसकी छवि को भारी धक्का लगा है। विडंबना है कि अन्ना हजारे के नेतृत्व वाले 'भृष्टाचार-विरोधी आंदोलन' से उपजी आम आदमी पार्टी स्वयं भृष्टाचार के कीचड़ में गले तक ढूब गई है। पार्टी के कई नेता व पूर्व मंत्री जेल की सलाखों के पीछे हैं। मजेदार बात है कि इन नेताओं को केजरीवाल 'कट्टर ईमानदार' होने का प्रमाणपत्र देते रहते थे। अब स्वयं 'आप' नेता व दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की

‘शराब घोटाले’ में गिरफ्तारी से पार्टी की छवि मिट्टी में मिल गई है। केजरीवाल का सर्वोच्च न्यायालय ने कठोर शर्तों के साथ अंतरिम जमानत दी है और उनको 2 मई को पुनः पुलिस के समक्ष पेश होना है। ऐसे में केजरीवाल पार्टी के लिए चुनाव प्रचार के साथ ही संभवतः ‘वारिस’ की तरह दिल्ली की मुख्यमंत्री के रूप में अपनी पत्नी को विधायकों से स्वीकृति दिलाने का प्रयास करेंगे। केजरीवाल की रिहाई से पंजाब और दिल्ली में ‘आप’ की संभावनाओं पर ज्यादा असर पड़ने की उम्मीद नहीं है। पंजाब में पहले ही बहुकोणीय मुकाबले हो रहे हैं, जहां भगवंत मान सरकार का प्रदर्शन बहुत अच्छा नहीं रहा है। यहां भाजपा तथा अकाली दल ‘आप’ सरकार पर लगातार हमलावर हैं। मुख्यमंत्री मान पर आरोप है कि वे पंजाब की समस्याओं पर ध्यान देने के बजाय ‘आप’ प्रचारक का काम कर रहे हैं। केजरीवाल की गिरफ्तारी के बाद आम आदमी पार्टी उनको ‘लोकतंत्र सेनानी’ की तरह पेश कर जनता से भावनात्मक समर्थन मांग रही थी। अब उनकी अंतरिम जमानत पर रिहाई से उसका यह ‘कार्ड’ बेकार हो गया है। इसके साथ ही खासकर दिल्ली में भाजपा को आम आदमी पार्टी तथा केजरीवाल के भ्रष्टाचार के खिलाफ और तीखे हमले करने का बेहतर मौका मिल गया है। अब वह लोकसभा चुनाव में सीधे केजरीवाल से भ्रष्टाचार के आरोपों पर जवाब मांग सकती है। भाजपा ने केजरीवाल की रैली के बाद दिल्ली में अपने सिख समर्थकों की विशाल ‘मोटरसाइकिल रैली’ निकाल कर मजबूत जनाधार का परिचय दे दिया है। केजरीवाल भले ही अपने बड़बोले व हास्यास्पद बयानों से मीडिया में सुर्खियां बटोर लें, पर इससे वे ‘भाजपा समर्थकों’ में भ्रम पैदा करने में सफल नहीं होंगे। वैसे भी अब आम जनता में आम आदमी पार्टी-आप की छवि पहले जैसी नहीं रह गई है।



पंजाब और दिल्ली में 'आप' की संभावनाओं पर ज्यादा असर पड़े की उम्मीद नहीं है। पंजाब में पहले ही बहुकोणीय मुकाबले हो रहे हैं, जहां भगवंत मान सरकार का प्रदर्शन बहुत अच्छा नहीं रहा है। यहां भाजपा तथा अकाली दल 'आप' सरकार पर लगातार हमलावर हैं। मुख्यमंत्री मान पर आरोप है कि वे पंजाब की समस्याओं पर ध्यान देने के बजाय 'आप' प्रचारक का काम कर रहे हैं। केजरीवाल की गिरफ्तारी के बाद आम आदमी पार्टी उनको 'लोकतंत्र सेनानी' की तरह घेश कर जनता से भावनात्मक समर्थन मांग रही थी। अब उनकी अंतरिम जमानत पर रिहाई से उसका यह 'कार्ड' बेकार हो गया है। इसके साथ ही खासकर दिल्ली में भाजपा को आम आदमी पार्टी तथा केजरीवाल के भ्रष्टाचार के खिलाफ और तीखे हमले करने का बेहतर मौका मिल गया है। अब वह लोकसभा चुनाव में सीधे केजरीवाल से भ्रष्टाचार के आरोपों पर जवाब मांग सकती है। भाजपा ने केजरीवाल की रैली के बाद दिल्ली में अपने सिख समर्थकों की विशाल मोटरसाइकिल रैली निकाल कर मजबूत जनाधार का परिचय दे दिया है। केजरीवाल भले ही अपने बड़ेबोले व हास्यास्पद बयानों से मीडिया में सुर्खियां बटोर लें, पर इससे वे 'भाजपा समर्थकों' में भ्रम पैदा करने में सफल नहीं होंगे। वैसे भी अब आम जनता में आम आदमी पार्टी-आप की छवि पहले जैसी नहीं रह गई है।

# پاکستانی سینا کا کٹوڑہ شیکنڈا

सैनिक अवस्थापना से टकराव के कारण इमरान खान का पतन हुआ है। इमरान खान अपने इस दृष्टिकोण के कारण और ज्यादा अलग-थलग हुए हैं।



किसी लक्ष्य या विचार की रक्षा करती हैं। पाकिस्तानी सेना ये तीनों काम करती है।' हालांकि, पाकिस्तानी सेना एक ऐसी सेना है जिसने कभी कोई युद्ध नहीं जीता है। इनमें 1947-48, 1965, 1971 या 1999 के युद्ध शमिल हैं। पाकिस्तानी सेना वर्तमान समय में ड्यूरंड रेखा के दोनों ओर 'धार्मिक अतिवादी' तत्वों को सीमित रखने के लिए कठिन संघर्ष कर रही है। यह पाकिस्तानी समाज का अंतिम ऐसा संस्थान है जो शुद्धतावाद के ऐसे गार्से पर चला है जो पहले से ही जर्जर पाकिस्तान को भारी नुकसान पहुंचा रहा है। यह तर्क दिया जा सकता है कि पाकिस्तानी सेना ने सत्तारूढ़ जटी के अन्य दो हिस्सों-सिविलियन राजनेताओं तथा धर्मगुरुओं के साथ मिल कर संप्रभु के प्रति जिम्मेदारी नहीं निभाई है। यह भी कहा जा सकता है कि अपने तमाम हथकंडों और कमियों के बावजूद पाकिस्तानी 'अवस्थापना' या सेना अब भी पाकिस्तानी राज्य का विघ्टन रोकने और उसे रक्षा देने में सक्षम एकमात्र संस्थान है।

पाकिस्तान में जमीन से कटे राजनेता और धर्मगुरु नस्लवाद, क्षेत्रवाद व अन्य कबीलाई आधारों पर विभाजन के प्रयास करते रहे हैं। लेकिन इसके बावजूद अनुशासित व 'एकरूपी' पाकिस्तानी सेना ब्रिटिश राज से विरासत में मिली अपनी विविधताओं को बलच रेजीमेंट, फ्रॅंटियर

लेकिन उन्होंने पूरी गंभीरता से इस तथ्य पर विचार नहीं किया था कि मियांवाली का यह पठान अपनी अपरिपक्वता के कारण अपनी शक्ति बढ़ाने का काम करने लगेगा और इस प्रकार अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारेगा। इमरान ने गलती से सोच लिया था कि वे इन्हें बड़े हो गए हैं कि पाकिस्तानी 'अवस्थापना' को जकड़ से बाहर निकल सकते हैं। यह सोचना उनकी भारी गलती थी। एक जिद्दी, बड़बोले व चीख-पुकार मचाने वाले इमरान खान को सत्ता से हटा दिया गया और अतीत के कुछ अन्य चेहरों की तुलना में उनका भारी अपमान भी किया गया। यह पाकिस्तानी राजनीति के लिए महत्वपूर्ण सबक था। इससे स्पष्ट हुआ कि हवा उलटने पर जनरलों को अच्छी लगाने वाली कोई भी राजनीतिक शक्ति सत्ता में वापस आ सकती है। इनमें शायद जिद्दी इमरान खान जैसे लोग शामिल नहीं हैं जो इतिहास में जीवित हैं तथा इतिहास से कोई सबक लेने को तैयार नहीं हैं। उनके कार्यकर्ताओं ने '9 मई' को दंगों और लूट की ऐसी योजना बनाई जिससे कोई बचा नहीं। इसमें छावनियों और जनरलों के आवास भी शामिल थे जो एक प्रकार से 'प्रतिबंधित' क्षेत्र थे।

मांगे।' उसने यह भी कहा है कि पीटीआई को 'रचनात्मक राजनीति' करनी चाहिए तथा 'आराजकता की राजनीति' से बचना चाहिए। स्पष्ट रूप से आईएसपीआर या सेना की ऐसी मांगें मानना इमरान खान की पार्टी पाकिस्तानी तहरीके इन्साफ-पीटीआई के लिए आत्मघाती होगा। यदि अनेकोंने नाटकीय घटनाओं को अंजाम देने के बाद पीटीआई इतना नीचे गिरती है तो उसकी पूरी भूमिका संदिग्ध हो जाएगी। इस प्रकार उसे इतिहास में 'आराजकतावादी' और 'देशद्वाही' के रूप में दर्ज कर लिया जाएगा और पाकिस्तानी जनता के दिमाग में पाकिस्तानी सेना देशभक्ति के प्रतीक के रूप में स्थापित हो जाएगी। सेना और पीटीआई के बीच ऐसी स्थिति पीटीआई के 'फल्स्प फ्लैग आपरेशन' के आरोपों को भी ध्वस्त कर देगी। स्पष्ट है कि पाकिस्तानी सेना पीटीआई और इमरान खान को 'अवस्थापन' को चुनौती देने की पूरी सजा देना चाहती है। इस प्रकार पीटीआई से संबंध सामान्य बनाने की उसकी पूर्वशर्त का अर्थ ऐसी कठोर परिस्थितियां तैयार कर देना है जिसमें पीटीआई व इमरान खान अपने दृष्टिकोण में नरमी न ला सकें।

लाकाप्रयत्न का जरा भा चन्ना कए बिना उनके पार्टी कार्यालय और कार्यकर्ताओं पर हमला बोल दिया। यह तक दिया जाता था कि इमरान खान बहुत लोकप्रिय नेता हैं, जबकि भट्टो और शरीफ परिवार बहुत बदनाम हो चुके हैं। लेकिन पाकिस्तानी सेना के आशीर्वाद से आज वही सत्ता में हैं। इस प्रकार जिदी इमरान खान ने स्वयं को एक कठघरे में बंद कर लिया है और पाकिस्तानी सेना के खिलाफ खड़े होने के कारण उनकी पहचान संकट में है। पाकिस्तानी सेना इमरान खान को बापसी का कोई मौका नहीं देना चाहती है। ऐसे में इमरान खान की सफलता का एकमात्र रास्ता यही है कि वे अपनी वर्तमान रणनीति उलटना है जिससे पाकिस्तानी सेना ज्यादा प्रासांगिक बन जाएगी। लेकिन यह एक काल्पनिक स्थिति है। इसके साथ ही वर्तमान स्थितियों को देखते हुए एक संप्रभु राष्ट्र के रूप में पाकिस्तान का बने रहना भी संकट में है। इमरान से सुलह-समझौते के मामले में सेना में विभाजक रेखायें गहरी होती जा रही हैं। सेना का 'माउथपीस' करजे जाने वाले इंटर सविसर्जन पब्लिक रिलेशन-आईएसपीआर ने जोर दिया है कि पीटीआई के साथ संवाद तभी संभव है जब वह 'सार्वजनिक रूप से प्रेर देश के समक्ष ईमानदारी से अपने कल्पों के लिए माफी

एसा लगता है कि दश का वर्तमान स्थितियों से सबक लेते हुए पाकिस्तानी सेना अपने ऐतिहासिक सहयोगी संयुक्त राज्य अमेरिका से संबंध सामान्य बनाने के सारे प्रयास कर रही है। इसका कारण यह है कि इमरान खान ने खासकर अपनी सरकार गिराने के प्रयासों के लिए अमेरिका पर निशाना लगाया था। पाकिस्तानी सेना चीन से समर्थन के मामले में संतुलन बरतते हुए अब शेखों के साथ संबंध सुधारना चाहती है। वर्तमान समय में पाकिस्तानी सेना अफगानिस्तान में जड़े जमाए तबहोंके तालिबान पाकिस्तान-टीटीपी से भयानक खूनी संघर्ष में उलझी है। उल्लेखनीय है कि इमरान खान या 'तालिबान खान' खासतौर से टीटीपी के प्रति बहुत नरम दृष्टिकोण अपनाते थे। स्पष्ट रूप से पाकिस्तानी राज्य अब उस विद्रोही या अतिवादी दृष्टिकोण से ज्यादा दूर नहीं जा सकता है जिसकी पैरवी इमरान खान ने उसकी ओर से की थी। पाकिस्तान में सारी राजनीति सेना को केन्द्र में रख कर धूमती है, ऐसे में ऐसे में सभी नीतियां, पीटीआई ढांचा तथा व्यक्तिगत रूप से इमरान खान पाकिस्तानी सेना के लिए बलि के बकरे से अधिक और कुछ नहीं हैं। इस स्थिति के लिए कोई और नहीं, बल्कि स्वयं इमरान खान ही दोषी हैं।

# चुनावी दौर में नैतिकता दरकिनार

क्योंकि वे अपने विरोधियों को नीचा दिखाने के लिए चरित्र हनन का सहारा लेने से भी नहीं हिचकिचाते। इस डिजिटल युग में, छु का बड़े पैमाने पर उपयोग मामलों को और भी बदतर बना देता है।

तीव्र राजनीतिक  
प्रतिद्वंद्विता की  
विशेषता वाले गम्भीर  
राष्ट्रीय चुनावों के  
बीच, हम  
नैतिकता और  
नैतिकता के  
चिंताजनक क्षरण  
को देख रहे हैं।

**विनोद बहल**  
(लेखक, वरिष्ठ  
पत्रकार हैं)

राजनेताओं के आध्यात्मिक दावे और धर्मनिरपेक्ष प्रतिज्ञाएँ उनके सच्चे उद्देश्यों को झुठलाती हैं। भयंकर चुनावी घमासान से चिह्नित राष्ट्रीय चुनावों को गर्मी और धूल में, हम नैतिकता के साथ मानवता का बदसूरत चेहरा देख रहे हैं। पहली नजर में, सभी प्रकार के राजनेता अपनी आध्यात्मिक और धर्मनिरपेक्ष साख का प्रदर्शन करते हैं, धर्मिक स्थलों के चक्कर लगाते हैं और धर्मनिरपेक्ष सर्विधान की शापथ लेते हैं लेकिन चुनावी रैलियों और आचरण में उनके सार्वजनिक प्रवचन इसके विपरीत हैं क्योंकि वे धोखे और झूटी कहानियों को अपनाते हैं जिसमें सच्चाई सबसे बड़ी क्षति होती है। अपने जहरीले विस्फोटों से, वे अपने अस्तित्व नापाल का सार्वांग बन देते हैं।

के लिए स्वार्थ, धोखाधड़ी, भ्रष्टाचार और आपराधिकता में किसी भी हद तक जाने से गुरेज नहीं करते हैं। धन और शक्ति का हमारा नशा हमें नैतिक दिवालियेपन की ओर ने नहीं दैवी तरीके से ले लिया है।

छीन लेता है। हमारे पास धन और उच्च पद हो सकते हैं। लेकिन अगर यह हमारे नैतिक मूल्यों और नैतिकता की कीमत पर आता है तो इसका क्या फायदा? ऐसी भौतिक सफलता आनंद से रहित है। मनुष्य इस पृथक् ग्रह पर सभी प्रजातियों में से एक सर्वोच्च रचना है और हमें यह दुर्लभ जन्म ईश्वर को जानने और उसके साथ एक होने के मिशन के साथ दिया गया है। ईश्वर की एकता मानवता की एकता की ओर ले जाती है। एक बार जब हममें आत्म-बोध आ जाता है, तो हमारी नकारात्मक प्रवृत्तियाँ धीरे-धीरे दैवीय गुणों का स्थान ले लेती हैं। अपनी आत्मा की पवित्रता बनाए रखने से हम सच्चे इंसान बनते हैं, वास्तविक और शाश्वत सुख और शार्ति हमारे जीवन में आती है जब हम प्रेम, खुशी और शार्ति के पावरहाउस एक ईश्वर से जुड़े रहते हैं और आध्यात्मिकता और भौतिकवाद के बीच संतुलन बनाए रखना सीखते हैं।

तीव्र राजनीतिक प्रतिदृष्टिता की विशेषता वाले गर्म राष्ट्रीय चुनावों के बीच, हम नैतिकता और नैतिकता के चिंताजनक व्यापारों के बीच चुनावों के

आध्यात्मिक और धर्मनिरपेक्ष मूल्यों के बाहरी प्रदर्शन के बावजूद, उनके कार्य एक नलग कहानी बताते हैं क्योंकि वे चुनावी नाभ के लिए धोखे और चरित्र हत्या का घाहरा लेते हैं। जैसे-जैसे राजनीतिक रिदृश्य पर पैसा और ताकत हावी होती रही है, गरिमा और ईमानदारी जैसे प्रमद्धांतों पर लालच और अनैतिकता हावी होती जा रही है। जाति, समुदाय और आर्थिक आधार पर विभाजन पर आधारित राजनीतिक रणनीतियाँ समाज को और नाथिक खंडित करती हैं। मौलिक रूप से, विनवता की शक्ति और भौतिक संपदा की संरक्षण खोज ने हमें हमारे आध्यात्मिक सारांशों को दूर कर दिया है। हम अक्सर आध्यात्मिक प्राणी के रूप में अपनी वास्तविक पहचान पर भौतिक संपत्ति को अर्थमिकता देते हैं, जिससे नैतिक पतन होता है और किसी भी कीमत पर स्वार्थी नाभ की प्राप्ति होती है। हालाँकि, सच्ची तंतुष्टि हमारी आध्यात्मिक प्रकृति के साथ लालमेल बिठाने और परमात्मा से जुड़ने में प्रभित है, जो एकता और वास्तविक शारीरिक तंतुष्टि के लिए है।

## ॐ लाङ्गुर सत्दान

इंटरनेट, मोबाइल, कंप्यूटर आदि आधुनिक तकनीक को बढ़ती व्यवस्थाओं, कम मतदान प्रतिशत तथा लोगों की बढ़ती व्यस्तताओं को ध्यान में रखते हुए अधिक से अधिक मतदान सुनिश्चित करने के लिए सरकार को ऑनलाइन मतदान का विकास करना चाहिए। आज लाखों मतदाता या तो सफर में रहते हैं या व्यापार-उद्योग अथवा अन्य जरुरी कार्यों में व्यस्त रहते हैं। मोबाइल करीब-करीब सबके हाथों में रहता है। ऐसे में व्यस्त रहने के बावजूद वे उसका उपयोग करके मतदान में कहीं से भी भाग ले सकते हैं। आधार कार्ड या वोटर कार्ड भी सबके पास होता है। अतः उसी के आधार पर वोट करने की सविधा से मतदान में बढ़ती संभव भी है। फिलहाल आनलाइन मतदान में मतदाता की गोपनीयता, निजता तथा उसके स्वतंत्र व निष्पक्ष मतदान को लेकर कुछ सवाल जरूर उठते हैं, पर उनके तकनीकी समाधान खोजे जा सकते हैं। आनलाइन मतदान से देश के साथ ही विदेशों में पढ़ाई या नौकरी कर रहे भारतीय युवाओं और युवतियों को मतदान प्रक्रिया का हिस्सा बनाया जा सकता है। इससे भारतीय राजनीति की अनेक विकृतियां दूर होंगी तथा देश की युवा पांडी अपनी पूरी क्षमता के साथ राष्ट्रनिर्माण व उसके विकास की दिशा तय करने में उल्लेखनीय भूमिका अदा करेगी। आनलाइन मतदान समय की आवश्यकता है।

## ਤੁਰਜਾ ਦੇ ਮਹੱਤਵ ਕਾਰੋਬਦ ਸ਼ੋਦੀ

के जरीवाल ने पूछा है कि अगले साल मोदी 75 वर्ष के हो जाएंगे तो क्या उनकी जगह कोई और नेता लेगा? के जरीवाल ने इस संबंध में अमित शाह का नाम लिया, लेकिन अमित शाह ने फौरन इसका खंडन करते हुए कहा कि मोदी 2029 में भी पार्टी का नेतृत्व करेंगे। मोदी अभी जितने मजबूत, ऊर्जावान और उत्साह से लबरेज है उसे देखते हुए उम्र के लिहाज से उन्हें अपने पद से हटने की कोई जरूरत नहीं है और न बोजेपी ऐसा चाहोगी। अमेरिका और रूस के राष्ट्रपति भी उम्रदराज हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति के स्वास्थ्य पर सवाल उठते रहे हैं, फिर भी वे सत्ता का बखूबी संचालन कर रहे हैं। मोदी तो इनके मुकाबले अभी बहुत मजबूत है। यदि विपक्ष यह सवाल उठा रहा है तो क्या वह मान चुका है कि भाजपा फिर से सत्ता में पक्के तौर से आने वाली है? आज न सिर्फ राष्ट्रीय, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मोदी की कार्यक्षमता, बौद्धिकता व त्वरित निर्णय लेने की क्षमता की लोग प्रशंसा करते हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इस समय विपक्षी नेताओं के तमाम हथकंडों के बावजूद देश के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता हैं। मोदी जी को प्रधानमंत्री पद की जरूरत हो या न हो देश को अभी प्रधानमंत्री के रूप में मोदी और सिर्फ मोदी की जरूरत है।

- सुभाष बुडावन वाला, रतलाम

## मनोवैज्ञानिक संघर्ष

कांग्रेस और भाजपा के बीच चल रहा चुनावी मनोवैज्ञानिक संघर्ष किसी से छुपा नहीं है। इससे कांग्रेस की मुखरता और भाजपा का रणनीतिक दृष्टिकोण स्पष्ट है। साफ है कि राजनीतिक दल अपना समर्थन मजबूत करने के लिए जनता पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालना चाहते हैं। ऐसे में जनता को सचेत रह कर केवल मनोवैज्ञानिक रणनीतियों से प्रभावित नहीं होना चाहिए। हमें महत्वपूर्ण मुद्दों जैसे आर्थिक विकास, रोजगार, और सामाजिक न्याय, आदि पर ध्यान देना चाहिए। हमें राजनीतिक दलों के बादों और रणनीतियों के बजाय, उनके पिछले कार्यों, नीति निर्माण तथा गणराज्य परामर्श में उनके योगदान पर ध्यान देना चाहिए। चुनावी माहौल में भावनात्मक अपीलों और निजी हमलों की बाढ़ आ जाती है। राजनीतिक दलों द्वारा व्यक्तिगत हमलों से जनता के लिए अच्छे निर्णय लेने की प्रक्रिया बाधित होती है। एक नागरिक के रूप में हमें अपने मताधिकार का उपयोग जिम्मेदारी से करना चाहिए। राजनीतिक दलों की रणनीतियों को समझते हुए हमें अपने निर्णयों को सही सूचनाओं व तार्किक विश्लेषणों पर आधारित करना चाहिए। भ्रामक सूचनाओं से बचने व सही तथ्यों के लिए आधिकारिक सूत्रों का उपयोग करना भी बहुत जरूरी हो गया है।

मजब्बत सरकार आवश्यक

देश में चुनावी माहौल है। सारी दुनिया की नज़रें भी चुनाव परिणामों तथा नई सरकार के गठन की तरफ लगी हुई हैं। हर देश देखना चाहता है कि भारत में मजबूत सरकार बनती है या मजबूर। वर्तमान वैश्विक स्थितियों में आत्मनिर्भर भारत की छवि उभर रही है। इससे लगता है कि भारत दुनिया में नेतृत्व के लिए तैयार है। भारत ने पिछड़े देशों की सूची से निकलकर ढांचागत निर्माण, विज्ञान एवं तकनीक के विकास, अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने तथा व्यापार व व्यवसाय, आदि क्षेत्रों में जो प्रगति की है, उसके पीछे मजबूत सरकार के संकल्प ही हैं। आज अनेक महाशक्तियां भारत को अपना मित्र मानती हैं तो इसकी एक वजह भारत का व्यवहार और उसकी सबके साथ समान व्यवहार वाली नीति भी है। इसी क्रम को आगे बढ़ाने के लिए केंद्र में अपने पैरों पर खड़ी मजबूत व प्रचंड बहुमत वाली सरकार का गठन होना जरूरी है जो जरूरत के समय तुरंत फैसले ले सके, गठबंधन सहयोगियों के दबाव में न आए तथा पूरे देश के भविष्य में साहसी व लीक से हट कर फैसले ले सके। लोकसभा चुनाव से ऐसे जनादेश की आशा है।

- अमृतलाल मारू, इन्दौर

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से [responsemail.hindipioneer@gmail.com](mailto:responsemail.hindipioneer@gmail.com) पर भी भेज सकते हैं।









# पश्चिमी देशों में भारत के बारे में झूठी कहानी गढ़ी जा रही: भरत बराई

भाषा। वार्षिंगटन

एक प्रधृष्ट भारतीय अमेरिकी समूदाय के सदस्य का कहना है कि भारत में आम चुनावों के बारे में भारतीय लोकतंत्र द्वारा देखा जाए तो उन्होंने यह भी कहा कि औपनिवेशिक मानसिकता वाले कुछ लोगों की आलोचना से भारत को रोका नहीं जा सकता।

शिकायों में रहने वाले डॉ. भरत बराई ने अमेरिकी समूदायी देशों की मिडिया में कई समाचार लेखों और टिप्पणियों में भारत में लोकतंत्र, अधिकारियों की आजादी और मानवाधिकारों को लेकर उड़ाए जा रहे सवालों के संबंध में कहा, जरा संचित।

लोग (भारत में रहने वाले) नरेंद्र मोदी और अन्य बहुत से लोगों को बुगा-भला कह रहे हैं। अगर लोकतंत्र नहीं होता या फिर

तानाशाही होती तो क्या वह ऐसा कर पाए? अग्रणी कैंसर रेगिस्ट्रेशन डॉ. बराई ने पर कहा कि चुनाव शार्टिपूर्ण तरीके से गुजरा है और भारत में कीब 66 फैसलों लाग आवधि कारोबार के बारे में भ्रामक सुनानां फैलाने के साथ झूठी कहानी गढ़ी जा रही है। उन्होंने यह भी कहा कि औपनिवेशिक मानसिकता वाले कुछ लोगों की आलोचना से भारत को रोका नहीं जा सकता।

शिकायों में रहने वाले डॉ. भरत बराई ने अमेरिकी समूदायी देशों की मिडिया में कई समाचार लेखों और टिप्पणियों में भारत में लोकतंत्र, अधिकारियों की आजादी और मानवाधिकारों को लेकर उड़ाए जा रहे सवालों के संबंध में कहा, जरा संचित।

उन्होंने जोर देकर कहा कि भारत में लोकतंत्र बेहद जीवंत है।

डॉ. बराई ने ने रविवार को एक

साक्षात्कार में कहा, मुझे लगता है कि पश्चिमी देशों में कुछ लोग ऐसे हैं जिनकी अब भी औपनिवेशिक मानसिकता है। उन्हें अब भी लगता है कि वह दुनिया के बेताज बदलशह है। वे उन लोगों में से एक हैं, जो दुनिया के दूसरे देशों में भ्रामक रहा है उसपर अपने रखते हैं और वे अपने अप को अयातुल्ला (महलपूर्ण नेता) समझते हैं, जिनकी यह अंतिम होगी।

उन्होंने कहा कि लोगों का एक वर्ग भारत के बारे में भ्रामक सुनानां फैला रहा है और झूठी कहानी गढ़ रहा है।

उन्होंने एक सवाल के जवाब में कहा, मुझे लगता है कि हाँ। यह पूर्ण रूप से गलत सूचना है, पूरी तरह से गलत कहानी है, चाहे यह जारीबाकर किया गया हो या फिर कम जानकारी या गलत सूचना के कारण।

उन्होंने जोर देकर कहा कि भारत में लोकतंत्र बेहद जीवंत है।

डॉ. बराई ने ने रविवार को एक



**डॉ. भरत बराई ने कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रॉपे पर उन सिख अलगावादियों के खिलाफ कार्वाई नहीं करने के लिए निशाना साधा, जो भारत के भीतर और भारतीय नेताओं के खिलाफ हिंसा की खुलकर घड़यंत्र रखते हैं और हिंसा का समर्थन करते हैं।**

नहीं जा सकता।

उन्होंने कहा, सौभाय से प्रधानमंत्री नेट्रो मोदी के पास इस तरह की सभी अनावश्यक जीवंतों से बचने के लिए काफ़ी

अत्मविश्वास और दमदार व्यक्तित्व है।

डॉ. भरत बराई ने कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रॉपे पर उन सिख अलगावादियों के खिलाफ कार्वाई नहीं होनी चाही। डॉ. बराई ने कहा, खालिस्तान की समस्या सिर्फ़ और सिर्फ़ कनाडा में और हो सकता है कि थोड़ी बहुत अमेरिका में है।

उन्होंने कहा, खालिस्तान की समस्या सिर्फ़ और सिर्फ़ कनाडा में और हो सकता है कि थोड़ी बहुत अमेरिका में है।

उन्होंने कहा, आगे वे अपने लिए अलग जमीन चाहते हैं तो ट्रॉपे को उन्हें दे देनी चाहिए। अगर अमेरिका सोचता है कि यह एक अच्छी विचारा है (ये उन्हें ऐसा करने दीजिए)... हम अब्राहम लिंकन स्मारक (वार्षिंगटन डीसी) के सामने खड़े हैं जबकि एक भी व्यक्ति गिरफ्तार नहीं हुआ है। जब दीवान (अमेरिका) अलग होना चाहता था तो उन्होंने क्या किया? हाँ गृह युद्ध देखा है। वार्षिंगटन डीसी में उन्हें (लिंकन का) ग्राफ्टिंग मारा जाता है।

डॉ. बराई ने कहा, खालिस्तान की समस्या सिर्फ़ और सिर्फ़ कनाडा में और हो सकता है कि थोड़ी बहुत अमेरिका में है।

डॉ. बराई ने कहा, भारतीय सिखों का सकरात उन्हें जमीन का एक टुकड़ा देना चाही है तो उन्हें खुश रहने दीजिए। अधिकारक वे (खालिस्तानी समर्थक) के एक छोटे से हिस्से की समस्या है।

## रफह में रसद पहुंचाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं सहायता कर्मी

एपी। रफह

गाजा के रफह में सहायता कर्मी हजारों विश्वासित फैलतीरियों को खाली समयी और अन्य रसद पहुंचाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं जबकि इजराइल का कहना है कि रफह में उसका अधियान सीमित है। वही दक्षिण में गाजा के शहर के पास दो मुख्य क्रांतिकारियों वर्ग हैं।



अबरॉन इतेफा ने कहा कि आया लेकर 38 ट्रक पश्चिमी इजराइलिंग से पहुंच गए हैं। यह उत्तर गाजा तक पहुंचने का दूसरा प्रयोग था।

इजराइल ने रफह को चर्चापथी समूह हमास का आधिकारी गढ़ बताया है और अमेरिका तथा अन्य सहयोगी देशों की इन चेतावनीयों को नजरअंदाज करते हुए क्षेत्र में अपना अधियान शुरू किया है। जिन्हें इजराइल ने पहले भारी बमबारी और जमीनी अधियानों से तबाह कर दिया था।

एक हफ्ते पहले इजराइली सेनिकों द्वारा मिस्र से लगाई रक्षा योनिस और दूसरी देशों के नजरअंदाज करते हुए क्षेत्र में अपना क्रांतिकारी गढ़ बताया गया है। इजराइल ने पहले भारी बमबारी और अन्य अधियान तेज़ कर दिये हैं। साथ ही शहर के कुछ हिस्सों से लोगों को चलने जाने का आदेश दिया है।

पिछले सप्ताह से इजराइली सेना ने रफह में गाजी और अन्य अधियान तेज़ कर दिये हैं। साथ ही शहर के कुछ हिस्सों से लोगों को चलने जाने का आदेश दिया है।

जिन्होंने सप्ताह के अंदर, विश्वासित और खाली समाजी की अपीली और अन्य अधियान तेज़ कर दिये हैं। साथ ही शहर के कोई भी देशों के नजरअंदाज करते हुए एक विश्वासित अधिकारी ने इजराइल के लिए एक विश्वासित अधिकारी के रूप में अपना अधियान शुरू किया है।

उन्होंने सप्ताह के अंदर, विश्वासित और खाली समाजी की अपीली और अन्य अधियान तेज़ कर दिये हैं। साथ ही शहर के कोई भी देशों के नजरअंदाज करते हुए एक विश्वासित अधिकारी ने इजराइल के लिए एक विश्वासित अधिकारी के रूप में अपना अधियान शुरू किया है।

जिन्होंने कहा कि रफह के अंदर, विश्वासित और खाली समाजी की अपीली और अन्य अधियान तेज़ कर दिये हैं। साथ ही शहर के कोई भी देशों के नजरअंदाज करते हुए एक विश्वासित अधिकारी ने इजराइल के लिए एक विश्वासित अधिकारी के रूप में अपना अधियान शुरू किया है।

उन्होंने कहा कि रफह के अंदर, विश्वासित और खाली समाजी की अपीली और अन्य अधियान तेज़ कर दिये हैं। साथ ही शहर के कोई भी देशों के नजरअंदाज करते हुए एक विश्वासित अधिकारी ने इजराइल के लिए एक विश्वासित अधिकारी के रूप में अपना अधियान शुरू किया है।

जिन्होंने कहा कि रफह के अंदर, विश्वासित और खाली समाजी की अपीली और अन्य अधियान तेज़ कर दिये हैं। साथ ही शहर के कोई भी देशों के नजरअंदाज करते हुए एक विश्वासित अधिकारी ने इजराइल के लिए एक विश्वासित अधिकारी के रूप में अपना अधियान शुरू किया है।

जिन्होंने कहा कि रफह के अंदर, विश्वासित और खाली समाजी की अपीली और अन्य अधियान तेज़ कर दिये हैं। साथ ही शहर के कोई भी देशों के नजरअंदाज करते हुए एक विश्वासित अधिकारी ने इजराइल के लिए एक विश्वासित अधिकारी के रूप में अपना अधियान शुरू किया है।

जिन्होंने कहा कि रफह के अंदर, विश्वासित और खाली समाजी की अपीली और अन्य अधियान तेज़ कर दिये हैं। साथ ही शहर के कोई भी देशों के नजरअंदाज करते हुए एक विश्वासित अधिकारी ने इजराइल के लिए एक विश्वासित अधिकारी के रूप में अपना अधियान शुरू किया है।

जिन्होंने कहा कि रफह के अंदर, विश्वासित और खाली समाजी की अपीली और अन्य अधियान तेज़ कर दिये हैं। साथ ही शहर के कोई भी देशों के नजरअंदाज करते हुए एक विश्वासित अधिकारी ने इजराइल के लिए एक विश्वासित अधिकारी के रूप में अपना अधियान शुरू किया है।

जिन्होंने कहा कि रफह के अंदर, विश्वासित और खाली समाजी की अपीली और अन्य अधियान तेज़ कर दिये हैं। साथ ही शहर के कोई भी देशों के नजरअंदाज करते हुए एक विश्वासित अधिकारी ने इजराइल के लिए एक विश्वासित अधिकारी के रूप में अपना अधियान शुरू किया है।

जिन्होंने कहा कि रफह के अंदर, विश्वासित और खाली समाजी की अपीली और

